गोंड कोरकू जनजाति का सामाजिक जीवन एक विश्लेषण

बाळकृष्ण अढाऊ
ताक्षाशीला महाविद्यालय अमरावती

महाराष्ट्र की 6 विशेष पिछड़ी जनजातियों में से एक गोंड जनजाति धारणी क्षेत्र के 40 ग्रामों में निवास करते हैं। मेळघाट की नैसर्गिक संरचना 1200 से 1500 फुट की गहराई लिए हुए विस्तृत पाटियो का भू-भाग है, जो सतपुवा पर्वत की परतदार ऊंची किलानुमा श्रृंखलाओं से घिरा है। यह अद्वितीय विहंगम स्थल, जिला मुख्यालय अमरावती से उत्तरदक्षिण की ओर 90 कि. मी. दूर तथा अचलपूर(तहसिल) से 23 कि.मी. पर परातवाडा पांढुरणा मार्ग के पार्श्व में उत्तरी अक्षांश 22-28 से 22-29 डिग्री तथा पूर्वी देशांतर 78-45 से 50 डिग्री के मध्यम में स्थित है। संपूर्ण पातालकोट का भौगोलिक क्षेत्रफल 79 वर्ग कि.मी. है। • समुद्र की सतह से इसकी औसत ऊंचाई 2800 से 2200 फुट के बीच है।

धारणी तहसील के किसी भी गाँव में पहुंचने के लिए 1200 से 1500 फीट तक चढ़ना उतरना पड़ता है। धारणीमें नर्मदा, खांक, सापरा, सिपणा, गाडगा,और डोलारा नदियों के उद्गम की गहरी खाईयों में धूप बहुत देर से पहुंचती है और लगभग चार बजे तक गायब हो जाती है।

चुर्णी क्षेत्र संपदा से संपन्न क्षेत्र है। यहाँ कई प्रकार के मूल्यवान पेड पौधे एवं औषधियाँ पाई जाती है। प्रमुख रूप से सागौन, साल, बीजा, बौस आम, जामुन, महुआ, इमली, सेमल, पलास, पाकर, बेल, खेर, हल्दू, अचार, अमलाल, बेहरा, आंवला, तेन्दू, आदि के वृक्ष बहुतायत में है। क्षेत्र में प्रवाहित नदी नालों एवं सघन जनजातियों के प्रभाव से यहाँ की जलवायु सुहावनी है। वार्षिक औसत वर्षा 1250 से 1500 मि.मी. तक होती है। न्यूनतम अधिकतम तापमान 10 से 40 से के बीच रहता है। पूरे क्षेत्र में हल्का नीला कुहरा छाया रहता है।

अभी हाल ही में किये गये सर्वेक्षण के अनुसार चुर्णी क्षेत्र की कुल जनसंख्या 10000 पाई गई है। जिसमें 1017 पुरुष तथा 995 महिलायें है। उक्त कुल जनसंख्या में 98% आदिवासी जनसंख्या है। आदिवासीयों में प्रमुख रूप से कोरकू एवं गोंड है। पूर्व में इस क्षेत्र के 9 ग्रामों में कोरकू आदिवासी बसाहट शत प्रतिशत थी किंतु अब घटकर 6 ग्रामों तक सीमित हो गई है।

इस क्षेत्र के 12 ग्रामों की बसाहट संबंधी जानकारी निम्न है

अ क्र	ग्राम का नाम	प ह न	लो को क्र	टोलो की संख्या	परिवरो की संख्या	कुल जनसंख्या	जनसंख्या आदिवासी जनसंख्या	भारीया जनसंख्या	प्रतिशत
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1	वैरागड	13	४८४	३	५०	३५३		३५३	१००

२	काळमखार	१३	४८१		१६	८५	५९	26	३१
3	रंगूबेली	१३	४८		०१	०६	५९	०६	१००
4	सेमाडोह	१२	४७०	२	३९	२०६	५७	१४९	७०
5	बिजू धावडी	१२	४७१	२	३१	१९९	९९	१००	८०
6	हिवारा कोरडे	१३	४८२	-	११	८५		८५	१००
7	टेन्भूसोंडा	११	४६९	२	९	३१		३१	१००
8	चूर्णी	१३	४७५		१	०३		०३	१००
9	हतरु	१२	४६७	१	३३	२११	१२१	९०	४३
10	टीतंबा	१२	४५८		६०	३४१	१६५	१८४	५३
11	धनगड	१२	४५७	१	३४	२०९		२०९	१००
12	आमसरी मांगिया	१२	४६८	२	५३	२७२	८१	१०४	७१
	योग			**१३**	**३३८**	**२०१२**	**५८२**	**१४३०**	

उत्पत्ति (Origin) :-

गोंड कोरकूउत्पत्ति के बारे में प्रामाणिक व तथ्यात्मक जानकारी के अभाव में किसीनिर्णय तक नहीं पहुंचा जा सकता। डॉ. रदौल एवं हीरालाल के अनुसार कोरकू अपने मूल-संबंध को भूल गये है और अब इस जाति के अस्तित्व के संबंध में जो कथाएँ प्रचलित हैं उनका संबंध महाभारत युग से जोड़ा गया है।"

भार ढोने के कारण भारिया मात्रदंतकथा है। ऐसा लगता है यह किवदंतीगोंड कोरकूको तिरस्कृत करने के लिए चलाई गई है। जबकि गोंड का संबंध कभी कोरकू नामक आदिमजाति से रहा है।

डॉ. रदोल और हीरालाल ने गोंड कोरकूका मूल संबंध गोंड अथवा बांधोगढ़ का माना है। ये स्थान भार के क्षेत्रांर्गत आते है। इसकी पुष्टि इससे भी होती है कि परंपरा के अनुसार बहल के अनुसार जोन राजा कर्णदेव भी भाट जाति के थे। संभवतः गोंड कोरकूजाति का अनुसरण इन्हीं राजा के कारण हुआ होगा। यह काल 1040 से 1080 ई. के बाद का माना गया है।

स्वरुप (Race) :-

गोंड प्रविडियन (Dravidian) प्रजाति के आदिम लोग हैं जिनका निवास भारत के मध्य क्षेत्रीय राज्यों में रहा है। इन्हें गोंडिया भी कहा जाता है। सर हीरालाल और रसेल ने अपनी पुस्तक Tribes and castes of the cetnral province में लिखा है, कि गोंड या गोंडिया एक ही जाति के नाम है। गोंडिया के कई ग्रंथकारों ने देवी-देवता की पूजा करने वाले पुजारी के रुप में परिभाषित किया है। गोंड एक स्थान सूचक नाम है। गोंडिया अपने धरती के राजा, गोंड का विकल्प है। डॉ. रदौल की मान्यता के अनुसार गोंडिया घोरतम एक गौंड थे और वे स्थान परिवर्तित करने वाली खेती के तहत दहिया फसल

(Stop Cultivation) काटने का काम करते थे। एक तथ्य यह भी है कि गोंडिया और गौंडों में अंतर विवाह होते हैं तथापि गोंडिया सर्वथा एक पृथक पहचान वाली जनजाति होने के बावजूद भी संभवतः उसका संबंध कोलारिया या मुंडावर्ग, से रहा होगा, किंतु गोंडिया पूर्णतः अपनी मूल भाषा को भूल गये है और केवल 'हिन्दी' बोल सकते हैं ।

गोंडिया सामान्यतः मध्यम कद, छरहरा बदन, श्याम वर्णी होते है । आँखे छोटी, काली, नाक कुछ चौड़ी पर सुडौल होती है, लेकिन बाल पतले और दाँत बारीक होते है। स्त्रियों की अग्रिम दंतपंक्ति सर्वथा बारीक होती है। सामान्य रुप से देखने में गोंड कोरकू और भारीया जैसे लगते है। फिर भी उठने-बैठने बोलने की आदतें और नाक-नक्श के अंदाज से गोंड कोरकूस्त्री पुरुष अपनी अलग पहचान रखते है। गोंड कोरकूसामान्यतः डरपोकप्रवृत्ति कम बोलने वाले (शराब पीने अधिक बोलते अपने मस्त रहने वाले, सच्चे ईमानदार और मेहनती होते

जीवन और संस्कृति:-

गोंड कोरकू जनजाति का अस्तित्व मेळघाट मुख्यतः चंद्रपुर , यवतमाळ, धारणी में निवास करने वाले गोंड कोरकू गोंडों साथ रहते धारणीअंदर कोरकू बहुत और दुर्गम स्थानों निवास करते जहाँ केवल पैदल जायासकता है।

निवास, भोजन, वेशभूषा:-

गोंड अपने मकानों स्वयं निर्माण करते है। चंद्रपुर , यवतमाळ, धारणी में वाले भारिया अपने अलग ढाने बनाकर रहते

गोंड कोरकू का मुख्य भोजन पेज मक्का, जुवारी, कुटकी और पिसी पेज भारिया सबसे अधिक पसंद करते विभिन्न अवसरों कुटकी, धान, सावाँ, मक्का, जुवार, चावल भात बनाकर खाते मक्का, जुवार और पिसी आटे रोटी किसी तीज त्यौहार विशेष रुप बनायी जाती है। महुआ और आम की बीजी रोटी भारियाओं बरसाती भोजन है। गर्मी दिनों पातालकोट कोरकू आम गुठली इकट्ठी करते हैं, उसे फोड़ कर सुखा लेते कोरकू विभिन्न प्रकार भात, बेसन साथ बड़े चाव खाते महुआ घोंट, बलहर की दाल, ठेठरा पर्व त्यौहारों पर बनाया जाता है। ठेठरा गोंड कोरकू एकमात्र मीठा पकवान है। ठेठरा महुआ, जुवार आटे मिलाकर बनाया जाता है। कुटकी और चावल में डालकर खीर बनाई जाती है। गोंड कोरकूमौसमके अनुसार स्थानीय भाजियाँ खाते अषाढ़ भादों तक धबई की भाजी, भाडका, मौसिया, छिताबर, राजगिरा की भाजी खाते हैं। कुंवार पूस माघ माघ तक गिलकी, तुरई, लौकी, कद्दू खाते है। आलू स्वयं उगाकर खाते हैं। फागुन ढोगी बेरोटी चैत्र वैशाख जयेष्ठ चना, बरबटी, मैनहर, कातुल, टिंडे आदि सब्जियों का सेवन करते हैं। टेलो मे जगनी का तेल प्रमुख रूप से खाया जाता है। मिर्ची, प्याज, जीरा, धनियाँ, लहसुन का बधार लगाया जाता है। वैशाख से श्रावण तक पके आम चूमकर पेट भर लिया जाता है। गोंड कोरकूमांसाहारी है, बकरी, सुअर, पाहा, सांभर, लदैया का मांस खाते है। मछली खाना

और पकड़ना कोरकूका प्रिया शौक है। कुत्ता, बिल्ली, चूहा, गोरैया का मौस नहीं खाते लेकिन सांप और मोर का मांस खातें। गोंड व कोरकू कुछ कंदमूल खाते हैं। नंदमाती कंद उबालकर है। स्वाद में मीठा महकंद अगहन-पर्व में होता है। अगहन में एक सेवकंद पैदा होता है इसे उबालकर खाते है। मेतकंद का सफेद भाग खाते योग्य होता है। भादों में कडूकद होता है, जिसके पत्ते पान की बेल की तरह होते है। इसे गोल-गोल काटकर उसमें राल मिलाकर पानी में उबालते है। जंगली कंदरों में बरहा कंद पेट दर्द में दवा के रूप में काम में लाते है। वैचांदीकद को गोल-गोल काटकर तेल में तलकर खाया जाता है। रोजी कंद की खोर बनाई जाती है। गेजीकंद अदरक जैसा होता है। इनके अलावा गोहलारी, भैरो, टैगों, तोखरकंद, शहरकंद, मछरिया कंद, सहती, महुल, सुआ, रूस, चिकनानंद, चोल, बनसिंघाडा, वनमदरक आदि का उपयोग मौसम के अनुरूप किया जाता है। आम और महुआ का संग्रह प्रत्येक गोंड कोरकूके घर में मिल जायेगा। आम और महुआ अखाड़ी का भोजन है। महुआ की शराब गोंड कोरकूस्वयं बनाते है। शराब भारियाओं का अन्य आदिवासियों की तरह जीवन का सामान्य अंग है। जन्म, विवाह, मृत्यु आदि कार्यों में शराब का चलन नेग की तरह किया जाता है। इसलिए शराब आदिवासियों में सामाजिक और धार्मिक प्रतिष्ठा का पेय है। फिर भी अधिक शराब पीना गोंड कोरकूसमाज में बुरा माना जाता है।

हथियार और शिकार:-

कुल्हाडी गोंड कोरकूका हथियार है। शिकार गोंड कोरकूका प्रिय शोक है। शेर का शिकार हांका लगाकर करते हैं। पशु-पक्षियों के शिकार के लिए गोंड कोरकूविभिन्न प्रकार के फंदों का उपयोग करते हैं। नदी, झिरियाओं में से मछली पकड़ना गोंड कोरकूका मन पसंद कार्य है। मछली पकड़ने के लिये गोंड कोरकूकई प्रकार के जालों का प्रयोग करते है।

पंचायत एवं सामाजिक संगठन:-

गोंड व कोरकू का सामाजिक संगठन मजबूत एवं रुढ़ियों से बंधा है। गाँव का मुखिया पटेल कहलाता है। पटेल का पद परम्परागत होता है जाति पंचायत का मुखिया भी पटेल होता है। पंचायत के पांच पंच समाज में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। पंचायत का दूसरा प्रभावशाली व्यक्ति भुमका, तीसरा पड़िहार, चौथा कोटवार तथा पाँचवा गाँव का कोई भी स्याना होता है। कोटवार शासन की ओर से नियुक्त होता है, सरकार को गाँव की सारी सूचनाएं कोटवार देता है। पटेल तवली एवं लेव्ही वसूली में शासन को मदद करता है। कोटवार की सामाजिक प्रतिष्ठा भी अधिक होती है। पंचायत द्वारा लिये गये निर्णय समाज का प्रत्येक व्यक्ति मानता है न मानने वाले को दण्ड का भागीदार होना पड़ता है। समाज में स्त्री-पुरुष का दर्जा बराबरी का होता है। स्त्रियाँ पुरुषों के बराबर काम करती है। घर के भीतर और बाहर स्त्रियों का महत्व सदा बना रहता है।

काम धंधे कृषि मजदूरी:-

मूलतः गोंड कोरकूखेतों-खलिहानों में मजदूरी करते है। कर्जदार (साहूकार) नेगोंड कोरकूको पीढ़ी दर पीढ़ी बंधुआ मजदूर बनाकर रखा है। हिसाब किताब या पैसे के लेनदेन के मामले में भारिया नितांत भोले है।

लघु वनोपज एवं जड़ी-बूटियों का संग्रह गोंड कोरकूका दूसरा महत्वपूर्ण आर्थिक स्त्रोत हैं। पातालकोट में स्वाभाविक रूप से उगे आम, जामुन, आचार, हर्रा, महुआ, तेंदुपत्ता का संग्रह लोग मन लगाकर करते हैं और इनके मिलने तक साप्ताहिक हाटों में बेचते है। आम की गुठली और महुआ संग्रह अपने लिये भी करते हैं। बाँस की बनी सामग्री और छिंद पत्तियों तथा देवबहरी घास से झाड़ू बनाना और लकड़ियां में दरवाजों पर खुदाई कार्य करना धारणीके गोंड कोरकूलोगों की परंपरागत शिल्प है। बांस की टोकनियाँ, सूपडे, डालियां बनाकर गोंड कोरकूबेचते है और धन प्राप्त करते है। **छिंदवाड़ा और पचमढ़ी** में देवबहरी झाड़ू खूब बिकती है। धारणीपर्याप्त मात्रा में उत्पन्न होती है।परंतु गोंड कोरकूकी झाड़ू थोक में खरीदने वाले बिचौलियों एक झाड़ू पर दुगना-तिगना लाभ लेकर बेचते है। विभिन्न पेड़ों की छाल से रस्सियाँ बनाकर बेचना भी कोरकूका पारंपरिक धंधा है। आजकल कोरकू बक्खर की खेती करने लगे आर्थिक जीवन खुशहाल नहींहै। तंगीवाला है।

दिनांक 10/03/96 की स्थिति में सर्वेक्षण के आधार पर

ग्राम का नाम	पटवारी	लोकोन	कुल परीवार	गोंड परिवार	कुल जनसंख्या	भारीया जनसंख्या	गोंड कोरकू जनसंख्या	प्रतीशात
1	2	3	4	5	6	7	8	9
धनगड	12	126	41	41	229	-	229	100
टीतंबा	12	27	60	35	371	165	206	-
हतरु	12	136	35	16	228	121	107	-
आमसरी मांगिया	12	137	54	38	299	81	218	-
टेन्भूसोंडा	11	138	09	09	46	-	46	100
काळमखार	12	139	64	53	345	57	288	-
वैरागड	12	140	36	20	218	99	199	-
रंगूबेली	13	144	01	-	3	3	-	-
सेमाडोह	13	150	21	08	125	59	66	-
बिजू धावडी	13	151	16	16	102	-	102	100
हिवारा कोरडे	13	152	01	01	08	-	08	100
चूर्णी	13	153	64	64	442	-	442	100
योग			402	301	2416	585	1831	

धर्म एवं रीतिरिवाज:-

कोरकूअपने आपको हिंदू कहते हैं। Tribes and castes of the Central Province में श्री आर. व्ही. रसेल और डॉ. रायबहादुर हीरालाल ने भारियाओं को धर्म की दृष्टि से हिंदू बतलाया है। धर्म

की मान्यता की दृष्टि से भारिया स्वयं को हिंदू बतलाकर ग्राम देवों की पूजा करते है। ये हिंदू देवी-देवताओं की पूजा करते है एवं हिन्दुओं के त्यौहार श्रद्धा एवं उत्साहपूर्वक मनाते है।

गोंड व कोरकू आदिवासियों का स्पष्ट रूप से कोई धर्म नहीं है, जिसे कोई नाम दिया जा सके। भूत-पिशाच जैसे शाक्तियों पर गोंड कोरकूसहज विश्वास करते है। भारिया 'साजा' वृक्ष की जड़ों की पूजा करते है। 'बड़ा देव' या 'बूढ़ा देव' गोंड व कोरकू का ग्राम देवता है।

मेलघाट में ऐसी जड़ी-बूटियाँ पाई जाती है, जो भारत में अन्यत्र नहीं मिलती। ऐसी जड़ी बूटियों की पहचान और गुणों की जानकारी प्राप्त करने के लिए National Bathical institute Lucknow (U.P.) ने सर्वे कार्य किया है। संस्था की विस्तृत रिपोर्ट प्रतीक्षारत है।

पर्व त्यौहार (Festivals) :-

गोंड व कोरकू ट के प्रमुख पर्व त्यौहार प्रकृति से जुड़े हैं। निदरी, नवाखानी प्रकृतिजन्य त्यौहार है। जुबारा, दिवाली, होली धार्मिक त्यौहार हैं। बारहों महीने गोंड कोरकू में उत्सव के प्रति ललक देखी जा सकती है।

'बिदरी' धरती, बादल और बीज की पूजा का त्यौहार है। अनाज बोने से पूर्व जेठ माह में प्रत्येक गाँव में बिदरी पूजा का आयोजन होता है। बिदरी पूजा में पूरा गाँव शामिल होता है। एक दिन पूर्व गाँव मे बिदरी पूजा की सूचना दी जाती है। 'नवाखानी' प्राथमिक फसल की पूजा का त्यौहार है। नवाखानी को पुरखों की पूजा के साथ जोड़ दिया है। नवाखानी त्यौहार प्रत्येक परिवार में व्यक्तिगत रूप से मनाया जाता है।

कार्तिक अमावस्या को दिवाली का त्यौहार मनाया जाता है। इस अवसर पर भारिया पाँच आटे के दियों के साथ पाँच मिट्टी के दिये जलाते है। दिवाली पर लक्ष्मी पूजा में धन की पूजा करते है। गाय बैलों के सींगों को रंगते हैं। होली के त्याहौर के साथ मेघनाद की पूजा जड़ी है। पहले। 'मेघनाद' की पूजा होती है तब रंग-गुलाल खेला जाता है। होली पर पुरुष और महिलाए फाग गाती है।

विवाह:-

रसेल एवं हीरालाल ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि सामाजिक कुप्रथाओं केलिहाज से गोंड कोरकूपुरातन पंथी कहे जा सकते है। विवाह की तिथि ब्राहमण द्वारा ही निकाली जाती है। दुल्हन का मूल्य 6 रु. से 12 रु. तक होता है। गोंड कोरकूविवाह हिंदू रीति से ही पूर्ण करते हैं। विवाह के अवसर पर। 'मिटुआ' नामक नृत्य किया जाता है। गोंड कोरकूमें समगोत्र में विवाह नहीं होते। मामा-फुआ क लड़के-लड़कियों में विवाह सर्वोत्तम माना जाता है। ससुर को मामा कहते है। गोंड कोरकूमें विवाह की चार पद्धतियाँ प्रचलित है। 1. मंगनी विवाह या बारात विवाह 2. लमसेना 3. राजी-बाजी विवाह 4. विधवा विवाह। 1. मंगनी विवाह विवाह का प्रस्ताव लेकर सबसे पहले लड़के वाले लड़की वालों के यहाँ जाते हैं। रिवाज के अनुसार मगनी में दो बोतल दारु, दो पाई अनाज, दो या चार रोटी बांध कर ले

जाते हैं। लड़के वाले सीधे लड़की वालों के आंगन में जाकर बैठ जाते हैं और उस घर से एक लोटा पानी मांगते हैं। यदि शाम तक पानी नहीं मिले तो इसका मतलब उस घर वालों का संबंध करने का इरादा नहीं है। यदि लोटा भर पानी तुरंत मिल जाये तो संबंध होने का शुभ संकेत है। अतिथि पानी पीकर घर के अंदर ओसारी में चले जाते हैं। वहाँ वे रोटी और शराब निकालते है। पीना खाना होता है। इसे घर झड़ाई कहते है। घर झड़ाई में गाँव के दो चार पंच शामिल होते हैं। दोनों पक्ष और पंच संबंधी बातचीत करते है। समधिन के द्वारा पैर धोना सहमति का संकेत है। लड़का-लड़की पहले विभिन्न अवसरों पर हाट-बाजार, विवाह, नृत्य आदि में एक दूसरे को देख लेते है। इस समय एक बोतल शराब और एक रोटी समधिन को नेग के रूप में देनी पड़ती है। आसान बिछाकर उस पर पालथी मारकर बैठने के पश्चात् वहाँ रोटी भेजी जाती है। फिर भेंट-मिलाई होती है। समधी-समधी और समधिन समधिन गले मिलती है । इसी समय चिन्हारी का दिन तय होता है। सुविधानुसार आठ पन्द्रह दिन के बाद चिन्हारी करने के लिए लड़के वाले पुनः लड़की वालों के यहाँ आते हैं। इसे खर्ची बाला भी कहते है । चिन्हारी में दो स्याना, घर का मुखिया और एक बाई और लड़का साथ जाते है। इसी समय छोटीपगाई में चार पाई कुटकी के चावल ले जाते है जिसे सिंगदाना कहते है। यह पंच गंगा या भात होता है। खर्ची में एक खंडी कुटकी (लगभग एकक्विंटल) और साढ़े बारह कुड़ी कुटकी के साफ़ चावल दिये जाते है। देह धरते है। पंच गंगा निर्णय करती है। इस समय झुमका का निरपन निकाला जाता है। कुटकी के ढेर की नवार्गे में नेग में एक बोतल शराब दी जाती है। बाद में इसे भी पंच पीते हैं। सभी पंच मिलकर भोजन करते है। गांव को पंच को भोजन करने का मतलब लड़की अब पंच हो गई। आगे सारे धारणीके परियोजना सहायक एवं शिक्षा प्रभारी ने कहा कि धारणीमें वर्तमान में 4 शिक्षा गांरटी योजना, 5 प्राथमिक शाला। माध्यमिक शाला एवं एक आश्रम शाला है। यहाँ पर अध्ययरत छात्रों की संख्या करीब 305 है। इस बात का भी ध्यान उठाया गया कि धारणीक्षेत्र में एक बालक आश्रम की स्थापना होना चाहिये। जिससे बच्चों को लाभ मिल सके। जिलाध्यक्ष ने धारणीमें निवास करने वाले आदिवासियों के विकास एवं जो कार्य प्रस्तावित एवं हो रहे हैं उन्हें पूर्ण करने के लिये सभी संबंधितों लोगों को निर्देशित किया। अभी भी प्रशासन को सजग होकर धारणीके आदिवासियों के विकास के लिए बहुत कुछ किया जाना शेष है।

कुछ वर्ष पहले तक धारणीक्षेत्र के बाहर के भारिया अपनी लड़की की शादी धारणीक्षेत्र के ग्रामों में बसे लड़के से यहां की दुर्गमता के कारण करने को तैयार नहीं होते थे। किंतु यहां पर उपलब्ध नैसर्गिक संपदा जिसका उपयोग गोंड कोरकूजनजाति समूह परिवारों को सहज सुलभ है। की लालसा में धारणीक्षेत्र के बाहर के भारिया जनजाति परिवार के लोग धारणीक्षेत्र में अपनी पुत्री की शादी करने में उन्मुख हुए है। भारियाओं में रात में दूल्हे और अन्य मेहमानों का भोजन होता है। रोटी खाने के बाद रात भर नाचना गाना होता है। सुबह हल्दी लगाने की रस्म होती है। समधी-समधनि को दूल्हा-दुल्हन का हल्दी लगाते है। गोंड कोरकूमें कलात्मक 'मड़ा' (काष्ठ खम्ब) बनाने का काम 6-10 दिन पूर्व शुरु होता है।

गोंड कोरकूके 51 गोत्र होते हैं। परंतु 51 गोत्रों के बारे में सारे गोंड कोरकूनहीं जानते। अधिक से अधिक 15-16 गोत्र ज्ञातव्य है। गोंड कोरकूमें गोत्र-चिन्ह और कईप्रकार के निबंध प्रचलित है। आदिवासियों में रामगोत्र के एक सून के कटुबी गाने जाते हैं। विवाहदि में गोत्रों को अधिक महत्व दिया जाता है। भूल-चूक से गोंड कोरकूगोत्रचिन्हों का अपमान या उल्लंघन हो जाता है, तो गोंड कोरकूबेदी बिठाकर 'भुमका' से दिखाई सुनाई करते हैं, और पश्चाताप करते है।

प्रसव:-

रसेल एवं रायबहादूर हीरालाल ने अपने अध्ययन में गोंड कोरकूमहिला को कर बताया है। सामान्यतः प्रसवकाल में भी गोंड कोरकूमहिला काम करने जाती है और खेत में हो बच्चे का जन्म देती है। प्रसव के तीन दिन बाद कुछ रीति-रिवाज होते है। जो कि शुद्धिकाल कहलता है। बच्चों का नामकरण 6 माह बाद किया जाता है। इसे बच्चों के पिता की बहन संपन्न कराती है। अन्न प्राशन भी पहली बार इसी समय दिया जाता है। प्रसूता को घर में अलग बिस्तर पर सुलाया जाता है। आठ रोज सूतक रहता है। प्रसव गांव की सुनमाई कराती है। कुछ दिन बाद शिशु को छठी पूजन होता है। छठी माता जो बच्चों का भाग्य लिखती है की पूजा की जाती है। शिशु का नामकरण बच्चे की तथा किसी पुरखों के नाम पर या वीरों के नाम पर करती है। छठी के दिन गांव की महिलाएं जच्चा गाती है। छठी के आठवें दिन मृतक निकाला जाता है। प्रसूता अपने कपड़े स्वयं धोती है। नहा धोकर पुनः पर में प्रवेश करती है। इसी दिन शिशु का मुंडन संस्कार होता है। कैंची से शिशु के बाल उसका बुआ या कोई सयानी काट देती है। बुआ को नेग दिया जाता है।

संदर्भ:-

रसेल, हीरालाल :- ट्राइल्स एण्ड कास्टस ऑफ द सेंट्रल इंडिया

एलविन, वेरियर: द ट्राइबल आर्ट ऑफ द मिडिल ईस्ट इंडिया